मूलन ही की जहाँ अधोगति केसव गाइय।
होम हुताशन धूम नगर एकै भलिन्नाइय।
दुर्गति दुर्गन ही जु कुटिल गति सरितन ही में।
श्रीफल को अभिलाष प्रगट कवि-कुल के जी में॥48॥

शब्दार्थ—मूलन = जड़ों। अधोगति = नीचे को चलना, पतन। हुताशन = हुताशन, यज्ञ की अग्नि। धूम = धुआ। दुर्गति = बुरी दशा, दुर्गम। दुर्गन = किले। कुटिल = टेढ़ी। श्रीफल = कुच।

प्रसंग—इस छन्द में कवि ने बताया है कि अयोध्या में सर्वत्र धर्म का बोलबाला है, जहाँ सभी लोग प्रगतिशील हैं।

व्याख्या—केशव कवि कहते हैं कि अयोध्या में नीचे को केवल वृक्षों की जड़ें ही चलती हैं, यहाँ पर किसी आदमी का पतन नहीं होता। केवल यज्ञ की अग्नि के धुएँ से ही नगरी काली होती हैं, वरना कोई भी व्यक्ति ऐसा नीच कार्य नहीं करता जिससे नगरी कलंकित हो। यहाँ पर किसी भी व्यक्ति की बुरी दशा नहीं है, यदि किसी की दुर्गति है अर्थात् अगम्य है तो वह केवल किलों की है। यहाँ पर कोई भी व्यक्ति कुटिल (टेढ़ी) चाल से नहीं चलता; टेढ़ी चाल केवल यहाँ की नदियों की ही है। यहाँ पर किसी भी व्यक्ति के मन में श्रीफल (धन) की कामना नहीं है। केवल कवि-कुल के मन में ही काव्य में वर्णन करने के लिए श्रीफल (कुच) की अभिलाषा प्रकट होती है।

अलंकार—परिसंख्या अनुप्रास।